हो गया। पुसँ की कला के विकास के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि आयु के 35वें वर्ष तक उनकी कला में जो रोमांसवादी उमंग, ऊष्म रंग संगति का प्रभाव, स्वच्छंद अंकन पद्धति एवं स्पष्ट तूलिका संचालन के गुण थे उनके स्थान पर नियंत्रित रेखांकन, कुछ ठंडी रंग संगति आदि शास्त्रीय गुणों का दर्शन बाद में बनाये चित्रों में होने लगा। सम्पूर्ण चित्र संयोजन अब बौद्धिक विश्लेषण के साथ व अभ्यासपूर्वक किया जाने लगा। मुखाकृति शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए आदर्श बनायी जाने लगीं व मानवाकृतियाँ मूर्तिशिल्प के समान ठोस बन गयीं। रंगों में शुष्क व कम चमकीले रंगों को प्राधान्य मिला। संक्षेप में कला के उत्तेजक व नैसर्गिकतावादी तत्त्वों का स्थान अमूर्त व विषय के दार्शनिक पक्ष के तत्त्वों को दिया गया। पुसँ पुरातन शास्त्रीय कला के निष्ठावान प्रशंसक थे व उन्होंने कारावाद्ज्यो की कला को दिशाहीन माना। इसके बावजूद वे मानवीय एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी थे। इसीलिये उनकी कला शास्त्रशुद्ध होते हुए उसमें ऐन्द्रिय सौन्दर्य का आकर्षण है। उसमें शास्त्रीय कला की उदासीनता नहीं है बल्कि वह नैसर्गिक चैतन्य से सजीव लगती है।

आयु के 30वें साल में रोम जाने के बाद उन्होंने जीवन का अधिकतर काल इटली में ही बिताया किन्तु उनकी कला फ्रेंच कला से अधिक सामीप्य रखती है जिसका प्रमुख कारण है उसकी भावुकता। तुलनात्मक दृष्टि से उनके चित्र छोटे आकार के हैं। उन्होंने धार्मिक व पौराणिक विषयों को लेकर चित्र बनाये व एक आत्म चित्र को छोड़कर व्यक्तिचित्र नहीं बनाये। इटली में निवास होने पर भी उन्होंने फ्रेस्को चित्रण नहीं किया। पुसँ के द्वंद्वात्मक सर्जनशील व्यक्तित्व की विशेषता यह थी कि वे सौन्दर्य के प्रेमी थे किन्तु उसको उन्होंने संयम से नियंत्रित रखा। वे रंगों के प्रति आकृष्ट थे किन्तु उनको उन्होंने प्रमुख स्थान नहीं दिया। उनको सत्य प्रिय था किन्तु उसको उन्होंने आकस्मिक व क्षुद्र तत्त्वों से पृथक् रखा। उनकी शास्त्र निष्ठता के बावजूद उनके निम्न चित्रों को हम मौलिक एवं प्रतिनिधि मान सकते हैं, 'संत मॅथ्यू व देवदूत', 'सेबाइन स्त्रियों का अपहरण', 'फोसियाँ की शव यात्रा'। शास्त्रशुद्ध रचना-सौन्दर्य के कारण पुसँ को सत्रहवीं सदी का सबसे श्रेष्ठ चित्रकार माना गया है। आधुनिक कला के जन्मदाता सेजान ने कहा था, "मैं पुसँ का अनुसरण करना चाहता हूँ किन्तु निसर्ग के सानिध्य में।"

क्लोद जेले जो क्लोद लोरँ (1600-82) नाम से विख्यात हैं, व्यावसायिक जीवन के प्रारम्भ में रोम चले गये व उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वहीं बिताया। वे ऐतिहासिक प्रकृति चित्र बनाने में निपुण थे। उनके इस प्रकार के चित्रों में वृक्ष, झरना, पहाड़ी आदि प्राकृतिक अंगों को महल, मकान, भग्नावशेष, मंदिर आदि मानव निर्मित पुरातन वस्तुओं के साथ चित्रित करके काल्पनिक दृश्य का निर्माण किया जाता था। जब वे किसी ऐतिहासिक या पौराणिक विषय को लेकर चित्र बनाते तो अक्सर पृष्ठभूमि के प्राकृतिक अंगों को इतना महत्त्व देते कि वह प्रकृति चित्र के समान बन जाता। प्रकृति चित्रण के इतिहास में उनको अग्रगामी चित्रकारों में स्थान दिया गया है (चित्र 64)। प्रभाववादियों के समान उन्होंने दृश्य की बाह्य यथार्थता को महत्त्व नहीं दिया बल्कि उसमें अपनी कल्पना के अनुसार परिवर्तन करके उसको मनोहर व भावपूर्ण बनाया। अतः उनके चित्रों को यथार्थवादी के बजाय

Scanned with CamScanner

काल्पनिक प्राकृतिक चित्र कहना उचित होगा यद्यपि दर्शनीय प्रभाव में उनमें और यथार्थवादी प्रकृति चित्रों में कोई अन्तर नहीं जान पड़ता। उनके पारदर्शी जलरंगों में बनाये स्थूल प्रकृति रेखा चित्रों का प्रभाव परम्परागत शैली के चीनी प्रकृति-चित्रों के समान है। बॅरोक शैली के अन्य फ्रेंच चित्रकारों में से वीजी ल ब्र्यूं, शार्ल ल ब्र्यूं, ब्लांशार्द, ज्यां जुवेने, क्लोद विन्यो व सेबास्तिआं बुर्दों ख्यातनाम थे।

डच बॅरोक कला

सत्रहवीं सदी में डच कला उत्कर्ष की चरम सीमा तक पहुँची थी व यह कालखण्ड डच कला का सुवर्ण युग माना गया है। इस काल की डच कला की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनसे वह अन्य देशों की कला से स्पष्टतया भिन्न दिखायी देती है।

सोलहवीं सदी में हॉलैण्ड पर स्पेन का शासन था। विदेशी शासन के दमनचक्र व धार्मिक असहिष्णुता के खिलाफ डच जनता ने आन्दोलन शुरू करके 1581 में देश की स्वतंत्रता को घोषित किया व सत्रहवीं सदी के आरम्भ में हालैण्ड स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र होने के बाद विदेशी व्यापार बढ़ा व देश सम्पन्न हुआ। सुख-समृद्धि, शान्ति व धार्मिक स्वातंत्र्य के साथ ही जनता में कलाभिरुचि व चित्रों की माँग बढ़ी। कुछ विद्वानों के अनुसार बदली हुई परिस्थिति डच कला के उत्कर्ष का एक कारण हो सकता है किन्तु केवल उसी से रेम्ब्रांट, वर्मेर, फ्रान्स हाल्स जैसे विश्वविख्यात चित्रकारों की कला की महानता का स्पष्टीकरण नहीं मिलता। रेम्ब्रांट के छाया प्रकाश के प्रभाव की अविश्वसनीय सच्चाई, फ्रांस हाल्स का प्रभुत्वपूर्ण निर्भीक तूलिका संचालन, वर्मेर का सूक्ष्मतर छटाओं का यथार्थ अंकन, राइस्डाल के प्रकृति-दृश्यों की स्वाभाविकता ये सब गुण उन महान कलाकारों की अद्‌भुत प्रतिभा का प्रकटीकरण है इसमें कोई सन्देह नहीं है।

स्पेन के चित्रकारों ने राजा व दरबार के अभिजात्य वर्ग के लिए चित्र बनाये जबकि डच चित्रकारों के चित्र मध्यम वर्ग की जनता के लिए थे। चित्रों के विषय भी जनता के दैनंदिन जीवन से सम्बन्धित हैं जो जनता को आकर्षित करके प्रसन्न कर सकते थे, जिनमें घरेलू प्रसंग, त्योहार, सराय व शराबखाने के दृश्य, फुरसत के क्षणों में संगीत, खेल, मद्य सेवन आदि में व्यस्त आदमियों के चित्र, व्यक्ति चित्र, प्रकृति दृश्य प्रमुख हैं। संक्षेप में, डच कला को हम सच्चे अर्थ में जनता की कला कह सकते हैं। चित्रण शैली भी ऐसी सरल व सादृश्यपूर्ण है कि चित्र आसानी से दर्शक के समझ में आकर उसको प्रभावित करने में नहीं चूकते। हर्षोल्लास व फुरसत के क्षणों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है। किन्तु उस समय हालैण्ड कृषि, व्यापार व उद्योग के क्षेत्रों में प्रमुख विकसित देशों में से एक होने पर भी डच कला में कार्य व्यस्तता के क्षणों के चित्रों का अभाव है। इसी तरह रेम्ब्रांट व उसके कुछ शिष्यों को छोड़कर, धर्म, पुराण व काव्य से सम्बन्धित विषयों की ओर डच चित्रकारों ने ध्यान नहीं दिया। उस काल में डच समुद्री यात्री विश्व के भिन्न महाद्वीपों तक पहुँच चुके थे किन्तु डच कला में विदेश यात्रा या विदेश दृश्यों के चित्र नहीं मिलते। किन्तु विषयों की सीमितता होते हुए डच कलाकारों ने कला के मूलभूत गुणों की ओर ध्यान देकर उनको इतना विकसित किया है कि वे सच्चे कलाकार थे इसमें कोई सन्देह

Scanned with CamScanner